में एक शहर है ...

अँधेरा

गौरव कुमार

... जिसमें हंस के 'घुसपैठिये' रहते हैं

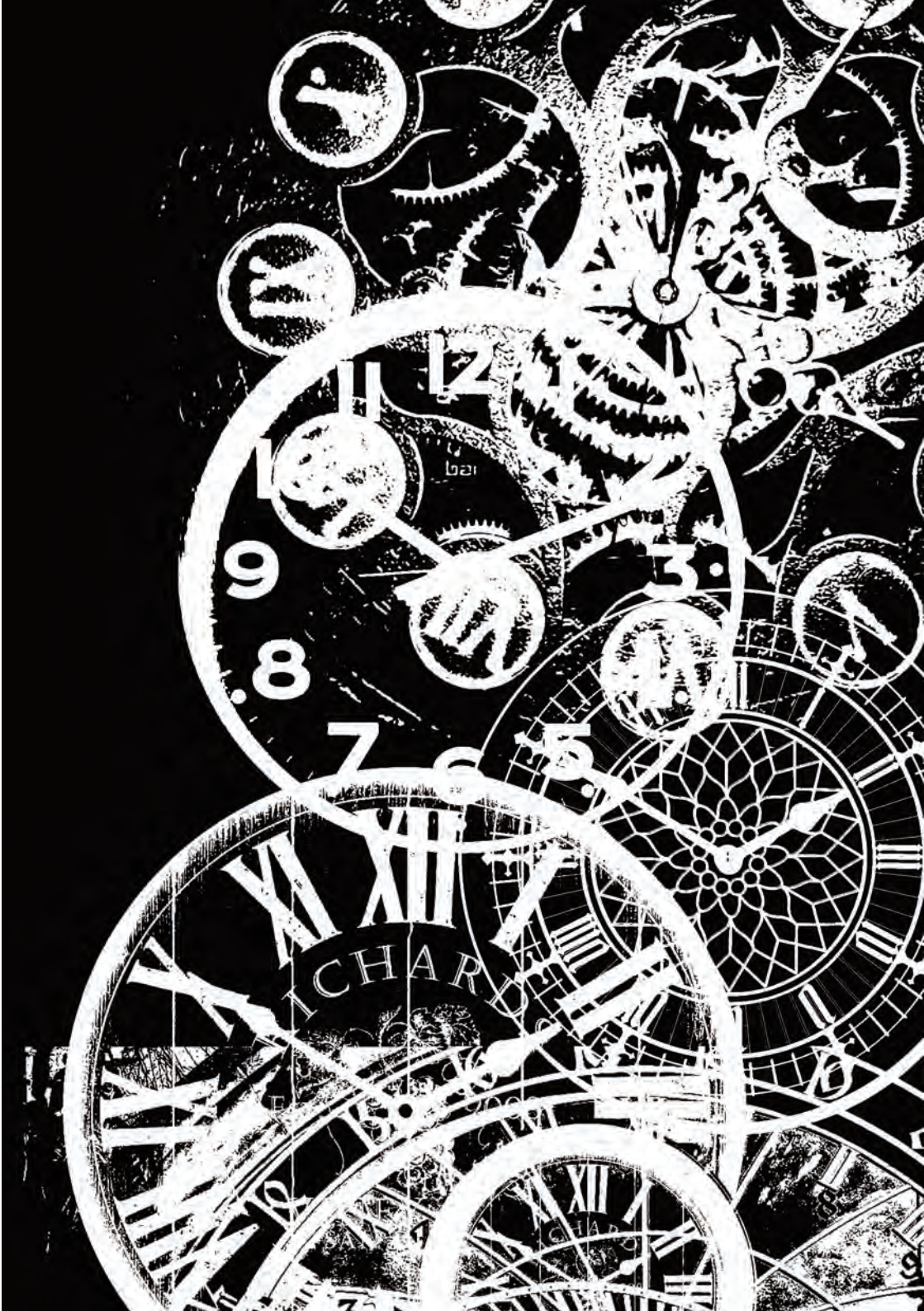

भट्टू की आँख खुली। वह कभी दायें तो कभी बायें देखने लगा। एक छोटी-सी रोशनदान से बाहर की तरफ़ देखने की कोशिश की, जब उसकी नज़र पूरी तरह से बाहर देखने लगी तो चारो तरफ़ अंधेरा था और तारों का झुंड देखते ही बन रहा था। तभी उसकी नज़र वहाँ से ओझल होकर घड़ी की तरफ़ गई तो घड़ी में सात बज चुके थे। उसे लगा कि शायद घड़ी खराब हो गई है या सेल खत्म हो गई है। वह टाइम देखने के लिए पापा के फ़ोन की तरफ़ बढ़ ही रहा था कि तभी फ़ोन की घंटी बज उठी, उसने फ़ोन उठाया और रिंगटोन को बंद किया। जब फ़ोन में टाइम देखा तो वहाँ भी सात ही बज रहे थे। वह कुछ समझ न पाया। अभी भी यही सोच रहा था कि शायद फ़ोन का भी टाइम खराब हो गया हो, पर पापा तो फ़ोन का टाइम हमेशा वर्ल्ड क्लॉक के हिसाब से ही रखते हैं। जब वह इस गुत्थी को सुलझा नहीं पाया तो वह चिल्ला पड़ा, 'मम्मी-पापा उठो। देखो यह क्या हो रहा हैं?' इस आवाज़ ने मम्मी और पापा के मीठी नींद मे खलल डाल दी और वे दोनों हड़बड़ाते हुए उठे और कहने लगे, 'क्या हुआ?'

भट्टू बोला, 'क्या पापा कैसे? चाइना वाले माल लाते हो, टाइम खराब हो गया है।' पापा बोले, 'बस इतनी-सी बात थी, तो मुझे क्यों उठाया?' 'ठीक है, आप तो सोते ही रहो, मैं विनोद से टाइम पूछ लेता हूँ।' पापा ने हँसते हुए कहा, 'वह अभी थोड़े न उठा होगा!' भट्टू ने जवाब दिया, 'वह अभी तक उठ चुका होगा।' पापा ने कहा, 'जा-जा देखते

हैं, लौटकर ही आएगा।' भट्टू लगभग पहुँचने ही वाला था कि देखा, कि गली में तो कोई भी नहीं है। उसने विनोद के घर की कुंडी खटखटाई, कुछ देर बाद विनोद बाहर निकला और भट्टू से बोला, 'क्या हुआ? इतनी जल्दी क्यों जगा दिया?' भट्टू ने कहा, 'तेरी घड़ी में कितने बज रहे हैं?' 'एक मिनट रूक, मैं अपनी घर की घड़ी में देखकर आता हूँ।' विनोद ने कहा।

विनोद टाइम देखने अंदर गया और तब तक भट्टू बाहर ही खड़ा रहा। जब भी कोई कुत्ता आस-पास से गुजरता तो वह झट से विनोद के घर के जीने पर भाग जाता। विनोद वापस आया, 'सात बज कर कुछ मिनट हो रहे हैं।' 'क्या यार, तेरी घड़ी का टाइम भी खराब हो गया है।' भट्टू ने कहा। 'क्या बात कर रहा है? मेरे घड़ी का टाइम भी कभी खराब हो सकता है? मैंने कल ही तो इसमें नई बैट्री लगाई है।' विनोद ने उत्तर दिया। 'कहा क्या?' और भट्टू का मुँह खुला का खुला रह गया।

विनोद ने कहा, 'यार तेरी घड़ी भी ठीक है, मेरी भी, पर अभी भी अंधेरा है, एक काम करता हूँ। अपनी मम्मी से पूछता हूँ।' वह घर के अंदर गया । उसकी मम्मी अंधविश्वासी थी। हर एक हफ्ते में कोई न कोई अफ़वाह फैला देती। कभी सिलबट्टे वाली चुड़ैल तो कभी रक्षाबंधन का श्राप! विनोद मम्मी के पास पहुँचा और मम्मी को जगाने लगा। उसकी मम्मी उठी और कहने लगी, 'क्या हुआ?' लगता था जैसे आज भट्टू और विनोद दोनों की

पिटाई होगी। क्योंकि वे दोनों ही अपने-अपने मम्मी-पापा को जगा कर बली का बकरा बन चुके थे। विनोद ने डरते-डरते कहा, 'मम्मी अभी तक सुबह नहीं हुई है और सात बज चुके हैं।' 'लगता है, शायद ग्रहण पड़ा होगा! पर ग्रहण पड़े और मुझे पता नहीं चले ऐसा तो हो ही नहीं सकता! न ही कैलेंडर में और न ही न्यूज में, कहीं भी ग्रहण के बारे में कुछ भी तो नहीं बताया गया। और, मेरे बाबा लाला नाथ ने भी इसके बारे में कुछ नहीं बताया। शायद काली माता आज गुस्से में होंगी, इसलिए उन्होंने सूरज को खा लिया होगा।' विनोद की मम्मी ने एक साथ इतनी बातें कह दीं। विनोद ने कहा, 'मम्मी एक बार आप अपने लाला नाथ बाबा से फ़ोन पर बात कर लो, क्या पता वह आपको बताना भूल गए हों?' मम्मी ने कहा, 'सही बोल रहे हो। मैं उनसे ही पूछ लेती हूँ।' मम्मी ने फ़ोन उठाया और नंबर डायल किया। मम्मी ने फ़ोन को अपने कानों से लगाया, जबकि मम्मी का फ़ोन अक्सर लाउडस्पीकर पर ही होता है। उधर लाला नाथ बाबा ने फ़ोन उठाया और कहने लगे, 'कौन हो बच्ची?' मम्मी ने कहा, 'बाबा बच्ची नहीं, मैं उन्नति बोल रही हूँ।' 'क्या हुआ उन्नति?' 'बाबा यह क्या हो रहा है। सात बज चुके हैं और सूरज अभी तक नहीं निकला!' मम्मी ने संकोच से कहा।

बाबा बोले, 'बेटी, मंगल की माया है, शनि की साया है, अपने सारे मोह को दिमाग से निकाल दो, भगवान तुम्हें सही राह दिखलाएगा। लेकिन यह याद रखना, यह प्रलय की पहली घड़ी है। आगे-आगे देखो, होता है क्या?' और

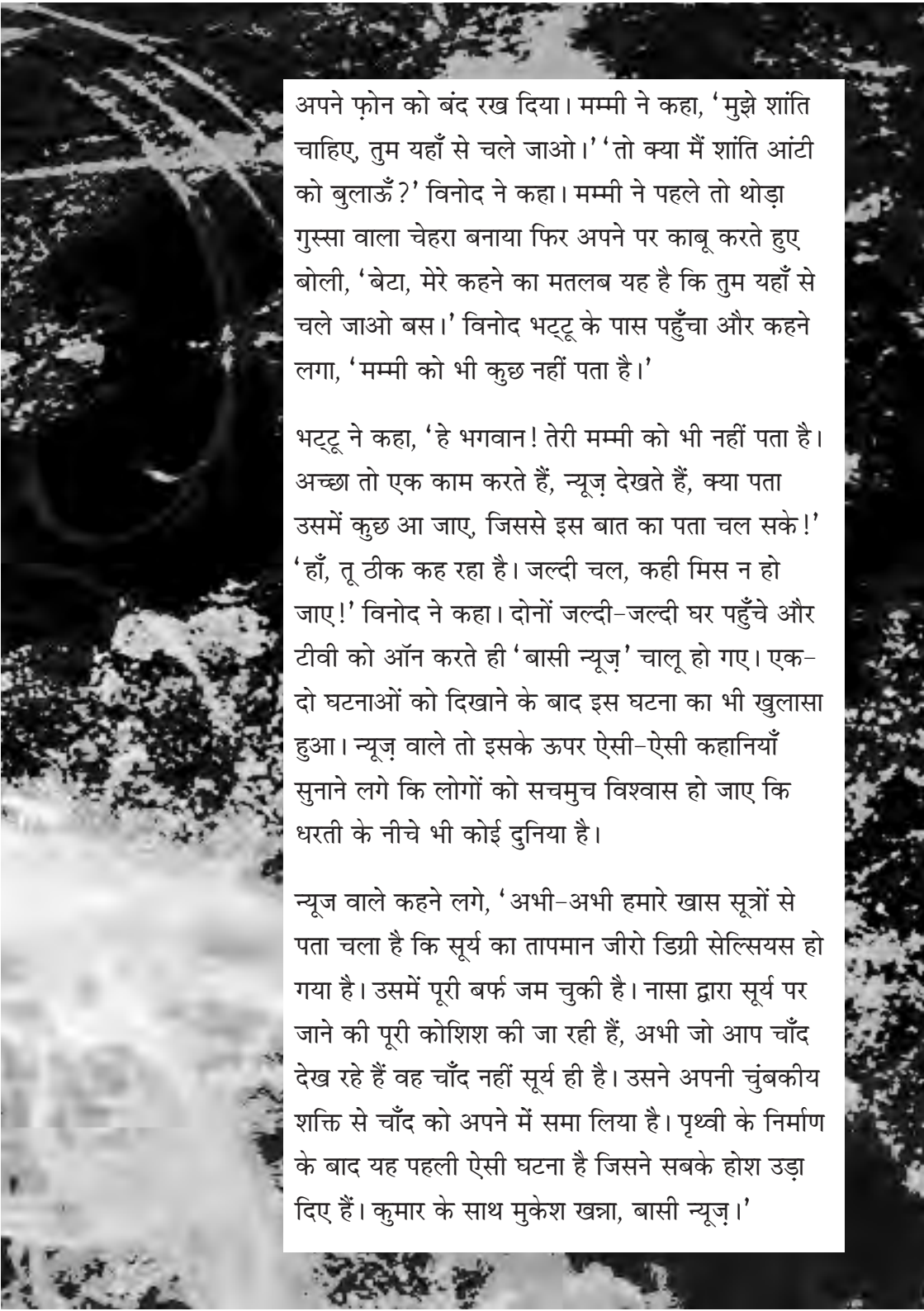

अपने फ़ोन को बंद रख दिया। मम्मी ने कहा, 'मुझे शांति चाहिए, तुम यहाँ से चले जाओ।' 'तो क्या मैं शांति आंटी को बुलाऊँ?' विनोद ने कहा। मम्मी ने पहले तो थोड़ा गुस्सा वाला चेहरा बनाया फिर अपने पर काबू करते हुए बोली, 'बेटा, मेरे कहने का मतलब यह है कि तुम यहाँ से चले जाओ बस।' विनोद भट्टू के पास पहुँचा और कहने लगा, 'मम्मी को भी कुछ नहीं पता है।'

भट्टू ने कहा, 'हे भगवान! तेरी मम्मी को भी नहीं पता है। अच्छा तो एक काम करते हैं, न्यूज़ देखते हैं, क्या पता उसमें कुछ आ जाए, जिससे इस बात का पता चल सके!' 'हाँ, तू ठीक कह रहा है। जल्दी चल, कही मिस न हो जाए!' विनोद ने कहा। दोनों जल्दी-जल्दी घर पहुँचे और टीवी को ऑन करते ही 'बासी न्यूज़' चालू हो गए। एक-दो घटनाओं को दिखाने के बाद इस घटना का भी खुलासा हुआ। न्यूज़ वाले तो इसके ऊपर ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाने लगे कि लोगों को सचमुच विश्वास हो जाए कि धरती के नीचे भी कोई दुनिया है।

न्यूज वाले कहने लगे, 'अभी-अभी हमारे खास सूत्रों से पता चला है कि सूर्य का तापमान जीरो डिग्री सेल्सियस हो गया है। उसमें पूरी बर्फ जम चुकी है। नासा द्वारा सूर्य पर जाने की पूरी कोशिश की जा रही हैं, अभी जो आप चाँद देख रहे हैं वह चाँद नहीं सूर्य ही है। उसने अपनी चुंबकीय शक्ति से चाँद को अपने में समा लिया है। पृथ्वी के निर्माण के बाद यह पहली ऐसी घटना है जिसने सबके होश उड़ा दिए हैं। कुमार के साथ मुकेश खन्ना, बासी न्यूज़।'

भट्टू और विनोद एक दूसरे से बात करने लगे, पता नहीं आजकल न्यूज़ वालों को क्या हो गया है। कोई भी कहानी कह देते हैं। चाहे कहानी सच्ची हो या झूठी कोई फ़र्क नहीं पड़ता। बस अपने ही न्यूज़-चैनल का नाम रोशन करना है। कुछ देर बाद गली के सभी लोग बाहर आ गए। उनके तो अभी से ही पसीना निकलना शुरू हो गया। कई लोग तो हाय-हाय करके चिल्लाने लगे। कई तो इधर-उधर भाग कर यह कहने लगे कि 'हे भगवान क्या हो गया.. ? हमारी दुनिया को क्या हो गया ?' अब सूरज कभी नहीं निकलेगा और हमारी दुनिया बर्बाद हो जाएगी! वे लोग भट्टू और विनोद को देखने लगे और कहने लगे, 'तुम्हें कुछ पता है ? यह क्या हो रहा हैं ?' विनोद के घर के बगल वाले अंकल ने बाहर आकर पूछा, 'तुम सब भीड़ क्यों लगा रहे हो ?' प्रवीण अंकल ने कहा. 'आप लोग क्या समझ रहे हो ? यह कोई छोटी-मोटी घटना थोड़ी ही है। अपने तीस साल के अनुभव में ऐसा कभी नहीं देखा। मुझे तो लगता है कि न्यूज वाले झूठ दिखा रहे हैं ?' तभी रामनारायण अंकल ने कहा, 'कोई यकीन करो या न करो, न्यूज़ वाले सही ही दिखा रहे हैं।'

तभी चौक की तरफ़ से कुछ पुलिस की गाड़ियाँ आती हुई दिखी, सब लोग हैरान रह गए। पुलिस की एक गाड़ी गली के सामने खड़ी हो गई और बाकी की चार-पाँच गाड़ियाँ आगे चली गईं। गाड़ी के अंदर से पुलिस वाले निकले, सभी के हाथों मे एक-एक राइफल थी। पैरों में काले-काले जूते पहने हुए थे। तभी एक पुलिस वाले ने अपने मुँह

में माइक लगाते हुए कहने लगा, 'सब लोग अंदर चले जाओ। उस आवाज़ को सुनते ही सभी लोग अंदर जाने लगे, लेकिन भट्टू के पापा अपने घर के दरवाज़े से नहीं हटे और चौखट पर बैठ गए। सभी पुलिस वाले आगे निकल गए, बस एक हवलदार ही भट्टू की गली में रह गया। कुछ देर बाद हवलदार ने भट्टू के पापा से कहा कि आप भी अंदर चले जाओ। लेकिन वह तो गाने सुनने में मस्त थे। हवलदार कहने लगा, 'मान जाइए, अंदर जाइए!'

इतने में बगल वाले अंकल जी अपने हाथ में पानी की बोतल लेकर निकल पड़े। जैसे ही वह अपने घर से बाहर निकले तो हवलदार ने उन्हें बाहर जाने से रोका तो वे अपनी पानी की बोतल को दिखाते हुए कहने लगे, 'साहब जाने दो, मुझे तेज की लगी है।' 'अभी कोई बात हो गई तो साहब से मैं क्या बोलूँगा?' हवलदार ने कहा, 'जल्दी से आ जाना, मै यहीं खड़ा हूँ। इधर भट्टू के पापा हवलदार से कहने लगे, 'साहब यहाँ शौचालय की काफ़ी दिक्कत है, रात में तो और भी ज़्यादा, आप देख ही रहे हैं।'

इतने में और भी लोग बाहर निकल पड़े, सबको बाहर निकलता देख हवलदार सभी को 'धीरज रखो' का सांत्वना देने लगा और कहने लगा, 'और हाँ ये प्राइवेट न्यूज़ देखना बंद कर दो, ये हमेशा उल्टी-सीधी चीजें दिखलाते रहते हैं! उस दिन मोदी जी की बिल्ली ने एक चूहा क्या खा लिया, बस उसी के पीछे पड़ गए और न्यूज़ में दिखाने लगे कि 'आज भी बिल्लियाँ चूहों को बड़ी-ही बेरहमी से खाती हैं।' बताओ यार, यह भी कोई न्यूज़ हुई। बिल्ली को भूख

लग रही होगी। बेचारी को एक चूहा भी नहीं खाने दिया जा रहा है।' हवलदार ने अकड़ते हुए कहा। 'आप लोग जाकर सरकारी न्यूज़ देखिये, उसी में सही-सही चीजें दिखलाते हैं।' एक आंटी ने कहा, 'हाँ-हाँ सही बोल रहे हो, सरकारी न्यूज़ ही सबसे अच्छी न्यूज़ है। हमेशा सही-सही न्यूज़ और हमारे काम में आने वाले न्यूज़ दिखलाते हैं। परसों ही दिखला रहे थे कि 'लैक्मे के सभी प्रोडक्ट के रेट में कमी आ गई है।'

हवलदार कहने लगा, 'हाँ-हाँ सरकारी न्यूज़ वाले सबके काम आने वाले न्यूज़ ही दिखलाते हैं।' सभी लोग कहने लगे ठीक है, एक बार सरकारी न्यूज़ देख ही लेते हैं। सब लोग अपने-अपने घर के तरफ़ चल पड़े। सभी अपने घर में पहुँच कर टी.वी. चालू करने लगे, तभी बिजली के ट्रांसफार्मर के फटने की आवाज़ आई और बिजली गुल हो गई। सब लोग बाहर आ गए और हवलदार के पास आकर खड़े हो गए। हवलदार कहने लगा, 'क्या हुआ इतनी जल्दी न्यूज़ देख लिया!' एक आदमी ने कहा. 'अरे भाई, लाइट चली गई, आपने आवाज़ नहीं सुनी क्या? अभी एक बम की आवाज़ आई थी।' हवलादार कहने लगा, 'हाँ-हाँ सुना तो था पर यह नहीं पता था कि इससे लाइट चली जाएगी! अगर पता होता तो मैं ट्रांसफार्मर के ऊपर पत्थर नहीं फेंकता।' भटटू के पापा ने कहा, 'अच्छा हवलदार भाई, जरा यह बताओ दो-तीन दिनों से गलियों के सामने क्यों खड़े रहते हो?' हवालदार ने कहा कि हमारे जेल से एक कैदी भाग गया है।' भटटू के पापा बोले, 'लगता है, आपके

जेल की सिक्युरिटी मजबूत नहीं है।' हवलदार ने कहा, 'अरे नहीं, सिक्युरिटी बहुत मजबूत है लेकिन हमारे जेल की दीवार बहुत कमज़ोर है, जबकि वह सर्वश्री बांगर सीमेंट से बनी है। सासता नाइ, साबसे आछा। लेकिन जेल का एक कैदी ट्रक से दीवार तोड़ कर भाग गया है।'

भटटू के पापा ने कहा, 'तो ऐसी बात है। अब बिजली भी नहीं है, अब हम न्यूज़ कैसे देखें!' तो विनोद के पापा ने कहा, यार तू अपने लैपटॉप को चला ले न, उसमें बैट्री तो होगी!' भटटू के पापा बोले, 'यार बोल तो सही रहे हो।' भटटू के पापा ने अपना लैपटॉप खोला और कहा, 'जब तक मैं सर्च कर रहा हूँ तब तक आप चाय बना लाओ।' विनोद के पापा ने कहा, 'ठीक है।' सर्च करने के लिए लिखा– गवरमेंट न्यूज़ डॉट कॉम डॉट इन, और इंटर किया। न्यूज़ दिखने लगा, 'आज सुबह-सुबह एक ट्रेन पटरी से उतर गई है। किसी के मरने की पुष्टि नहीं हुई है।'

एक और खबर, 'सूरज निकल चुका है। लेकिन सावदा-घेवरा कॉलोनी में अभी तक नहीं निकला है। वहाँ के निवासी इस वक्त असमंजस की ज़िंदगी में फंसे हुए हैं। सब जगह सूरज निकल चुका है, सारे कामकाजी लोग अपने-अपने काम पर जा रहे हैं। स्कूली टीचर अपने-अपने घरों से रवाना हो चुके हैं, सावदा के स्कूल अभी बंद हैं, चौकीदार सो रहा है।' सावदा के बारे और भी कुछ बोलने वाले थे कि लैपटॉप की बैटरी खत्म हो गई। भटटू के पापा उसको बंद कर बाहर आए और कहने लगे, 'हर जगह

सुबह हो चुकी है, सब लोग अपने-अपने काम पर जाने के लिए तैयार हो जाइए, वर्ना आज की मजदूरी मारी जाएगी।'

रोज़ाना की आदत से सभी जग तो रहे थे लेकिन अंधेरा होने की वजह से आँख बंद करके दोबारा से सो जाते थे, अरे अभी अंधेरा है, एक नींद और मार लेते हैं। आज तो सभी की मम्मियाँ और घरवालियाँ अगड़ाइयाँ लेकर सो रही थीं। बच्चों के तो मजे आ गए थे। सावदा मे पढ़ाने वाले टीचर ने जब सावदा में इंट्री लिया तो पता चला कि यहाँ तो अभी रात है। सभी ने अपनी-अपनी घड़ी पर नज़र गड़ाया और देखा कि उनका टाइम तो सही है पर चौकीदार अभी तक सोया पड़ा है। सावदा से जाने वाली बसें लाइट जलाए खड़ी हैं। भटटू के पापा ने अपनी बीबी को जगाया, 'अरे भगवान, अब तो जग जाइए, सुबह हो गई है।' 'अरे कैसी बात करते हैं, आप भी सो जाइए रात काफ़ी बची है। आपको नींद क्यों नहीं आ रही है।' 'आप को रात लग रही है बाहर के लोग सावदा में आने लगे हैं।'

बाहर के लोग भी यहाँ आकर चक्कर में फंस गए हैं, अरे सावदा को क्या हो गया है? सावदा के बच्चे अभी अपने घरों में सोये हुए पड़े हैं। रोज़ ड्यूटी जाने वाले लोग भी बेखबर सोये पड़े हैं।

डिस्पेंसरी के डॉक्टर भी आ गए हैं, आंगनवाड़ी की मैडमें भी, दूध वाले, तेल वाले, न्यूज़ वाले सभी सावदा में आकर अपनी-अपनी घड़ी को ही निहारे जा रहे हैं कि अरे सावदा में रात कैसे?

गौरव कुमार, जन्म- 06/02/2003. पिछले तीन सालों से अंकुर किताबघर के नियमित रियाज़कर्ता। किसी भी पत्र-पत्रिका में प्रकाशित होने वाली पहली रचना।

पता : एम- 503
सावदा-घेवरा जे.जे. कॉलोनी
दिल्ली- 110081
मोबाइल न. 09312413268

हौसला-अफ़ज़ाई

घुसपैठिये कॉलम मेरे लिए किसी भी हिंदी साहित्यिक पत्रिका का वर्तमान में सर्वश्रेष्ठ कॉलम है। आपने एक क्रांतिकारी कदम उठाकर अपना नाम इतिहास में दर्ज़ करवा लिया है। जब मुझ जैसे गाँव के छोरे की चिट्ठी तक कोई संपादक छापने का कष्ट नहीं करता वहाँ इन झुग्गी झोंपड़ी वालों और टैक्सी चालकों की रचनाओं को इस ऐतिहासिक पत्रिका में स्थान देकर आपने जो बड़ा काम किया है इसका अंदाजा शायद अभी बहुतों को नहीं है।

अनिल अबूझ, गाँव-सोनड़ी, त.-नोहर,
हनुमानगढ़-335523, राजस्थान

अंकुर पिछले तीस सालों से शिक्षा के क्षेत्र में संवाद और रियाज़ के ज़रिए लगातार सक्रिय है। हमारे प्रयोग के ये ठिकाने पाँच कामगार इलाक़ों में चलते हैं। यहाँ बच्चे-बच्चियाँ और किशोर-किशोरियाँ सुनने-बोलने-लिखने और पढ़ने का आनंद उठाते हैं। साथ ही मीडिया के तमाम रूपों के ज़रिए अपने अनुभवों को ज़ुबान देते हैं।

अंकुर सोसायटी फ़ॉर ऑल्टरनेटिव्ज़ इन एजुकेशन
76, दूसरी मंजिल, नेशनल पार्क, लाजपत नगर–IV
नई दिल्ली–110024
फ़ोन : +91 011 46552197
ईमेल : ankur.societyforeducation@gmail.com
वेबसाइट: www.ankureducation.net